स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोशल नेटवर्किंग साइट से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

गिरिजा भाटी
सहायक प्राध्यापक, विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल (म.प्र.) भारत

सांराश
*प्रस्तुत षोधपत्र में स्नातक स्तर के विद्यार्थियोंकी अध्ययन आदतों पर सोषल नेटवर्किंग साइट से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य के मुख्य उद्देष्य स्नातक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोषल नेटवर्किंग साइट्स से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना तथा स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोषल नेटवर्किंग साइट्स से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है। इस शोध कार्य में हमनें बरेली जिले के स्नातक स्तर के 100 विद्यार्थियो को न्यादर्ष के रूप में चुना है। आंकड़ों के सकलन के लिए उपकरण के रूप में **SNSs** की स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि किसी भी चीज के दो पहलू होते है। एक सकारात्मक तथा नकारात्मक अन्तर केवल उसका इस्तेमाल करने वालों में होता है। अच्छे कार्यो के लिए किये गये प्रयोगों से उसका सकारात्मक रूप उभरेगा तथा बुरे कार्यो के लिये किये गये प्रयोगों से उसका नकारात्मक रूप उभरेगा।*

मुख्यबिन्दुः— ज्ञान, सोषल नेटवर्किंग साइट, युवा, अध्ययन, आदतें

I प्रस्तावना

Plants are developed by Cultivation and men by Education. ***(John Lock)***

षिक्षा मानव निर्माण का मूल आधार है। षिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्म द्वारा शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौषल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, और उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्यु पर्यान्त चलता रहता है। षिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली तथा सीखने–सिखाने की सप्रयोजन सामाजिक प्रक्रिया है। षिक्षा प्रत्येक संस्कृति का मेरूदण्ड होती है। ज्ञान का उद्देष्य चरित्र निर्माण कर का विकास कर उन्हें सुसंस्कृत बनाती है।

डी0वी0 कोल के अनुसार–षिक्षा व्यक्ति की उन सब क्षमताओं का विकास है, जो उसे अपने वातावरण पर नियंत्रण करने तथ निहित सम्भावनाओं को पूर्णतः प्रदान कर सकें। वस्तुतः षिक्षा जब से मनुष्य के विकास की प्रक्रिया है। तब यह समाज, देष और विष्व के विकास की प्रक्रिया का आवष्यक हिस्सा रही है। अपने अस्तित्व के प्रारम्भ की षुरूआती अवस्था से ही मनुष्य सीखने की प्रक्रिया में मग्न रहा है। यही वर्तमान सभ्यता का आधार है। विभिन्न षिक्षा पास्त्री तथा विद्वानों ने षिक्षा द्वारा मनुष्य के विकास की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किये है।

विवेकानन्द (2007) के अनुसार – हम चाहते है कि षिक्षा ऐसी हो जो चरित्र का निर्माण करें। मस्तिष्क की रिजुता में वृद्धि करें। बुद्धि का विस्तार करें, और जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं के पैरों पर खड़ा हो सकें।

II अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

षिक्षा एवं समाज एक दूसरे के पूरक है। आज के युग में षिक्षा में तकनीकी का प्रयोग बढ़ा है। जिससे षिक्षा का स्वरूप भी बदला है। तथा उसने भी पारम्परिक परिधान त्याग कर नूतन वस्त्र धारण कर लियें है। अगर यूँ कहा जाये तो व्यर्थ न होगा कि वर्तमान पीढ़ी की षिक्षा का अधिकांष हिस्सा इंटरनेट या SNSs से पूर्ण होता हुआ प्रतीत हो रहा है। ऐसे हालातों में षिक्षा की दषा और दिषा को संवारने वाले षिक्षाविद, अध्यापकों, विद्यार्थियों, षोधार्थियों के लिए यह परम् आवष्यक हो जाता है कि वो उन प्रभावों का अध्ययन करें जो षिक्षा का सीधे–सीधे प्रभावित करते है। उन्हीं में से एक है।

लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ मीडियों को माना जाता है। किन्तु SNSs ने मीडियाँ की भूमिका को गौंड़ कर दिया है। लोगों के अन्दर इसके प्रति जागरूकता बढ़ी है। SNSs से सूचना का वितरण क्षण भर में हो जाता है।

(क) समस्या कथन–"स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोशल नेटवर्किंग साइट से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।"

(ख) प्रयुक्त पद– ज्ञान : प्रभाव, SNSs ,युवा , अध्ययन ,आदतें :

(ग) उद्देश्य–

(i) स्नातक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोषल नेटवर्किंग साइट्स से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
(ii) स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोषल नेटवर्किंग साइट्स से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

(घ) अवधारणायें

(i) वर्तमान में सबसे प्रचलित सोषल नेटवर्किंग साइट्स है।
(ii) सोषल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से समय का सदुपयोग होता है।

(iii) विद्यार्थियों की सोषल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति रूचि–रूझान है।
(iv) सोषल नेटवर्किंग साइट्स से विद्यार्थियों के अध्ययन पर प्रभाव पड़ता है।
(v) सोषल नेटवर्किंग साइट्स पर सामाजिक सहभागिता बढ़ती है।
(vi) सोषल नेटवर्किंग भविष्य को उन्नत बनाने में सहायक है।

(च) परिसीमांकन– हमने बरेली जिले के स्नातक स्तर के पाँच विद्यालयों का चयन किया है जो इस प्रकार है:–

(i) बरेली कॉलेज, बरेली।
(ii) खण्डेलवाल कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी, बरेली।
(iii) वीरांगना महारीनी अवन्तीबाई लोधी महाविद्यालय, बरेली।
(iv) महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय, बरेली।
(v) साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।

III अध्ययन विधि

षोधकर्ता ने षोध समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। षोध कार्य का महत्वपूर्ण आधार जनसंख्या होती है इसलिए समग्र जनसंख्या में से कुछ विषेष प्रतिनिधि न्यादर्षा का चयन कर लिया जाता है।100 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया।

IV आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अनुसंधान के चतुर्थ सोपान में एकत्रित किये गये आँकड़ों का सांख्यिकीय विधि से विष्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। आँकड़ों के तथ्यात्मक आधार पर वर्गीकरण किया गया है। अवधारणा के अनुसार उन्हें टेबल 1 से टेबल 6 में वर्गीकृत कर निष्कर्ष दर्षाया गया है

(क) अवधारणा (1): वर्तमान में सबसे प्रचलित सोषल नेटवर्किंग साइट्स है

टेबल –1
साइट की सदस्यता

क्र0 सं0	पद	फेसबुक	टविटर	गूगल+	मायस्पेस
1.	वर्तमान में आप किन सोषल नेटवर्किंग साइट्स के सदस्य है?	58%	10%	30%	2%
2.	आपकी पसंदीदा सोषल नेटवर्किंग साइट्स कौन सी है?	52%	7%	13%	28%

निष्कर्ष:– प्राप्त आँकड़ों के अवलोकन करने के पष्चात् हमें यह ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में लोगों का रूझान सोषल साइट्स की तरफ हुआ

(ख) अवधारणा (2): सोषल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से समय का सादुपयोग होता है।

टेबल–2
साइट का उपयोग

क्र0 सं0	पद	पिछले कुछ महीनों से	1 वर्ष से	1–2 वर्ष से	5 वर्ष से
1.	आप पिछले कितने वर्षो से SNSs का प्रयोग कर रहे है?	46%	26%	16%	12%
2.	आप सामान्यतः कितनी बार अपना SNS अकाउंट चेक करते है,	**3 से अधिक बार** 65%	**दिन में एक बार** 30%	**हफ्ते में एक बार** 4%	**कोई अन्य** 1%
3.	आप SNSs अकाउंट जाँचते समय एक बार में कितना समय लगाते है?	**16 मिनट या कम** 46%	**15 से 30 मिनट** 26%	**30 मिनट से एक घंटा** 16%	**एक घंटे से अधिक** 12%
4.	आप प्रत्येक माह SNSs अकाउंट चेक करने हेतु इण्टरनेट कनेक्षन पर कितना रूपया खर्च करते है?	**रू 50 या कम** 17%	**रू 50+** 14%	**रू 50+** 26%	**रू 200+** 43%
5.	आप अपने इन्टरनेट कनेक्षन खर्च का वहन किस प्रकार करते है?	**स्व–अर्जित धन से** 40%	**परिवार प्रवास जेबखर्च से** 46%	**उधार लेकर** 8%	**अन्य** 6%
6.	क्या आप अपनी दैनिक समय सारिणी में से SNSs पर व्यतीत करने हेतु एक निश्चित समय नियत करते है?	**अवश्य** 47%	**कभी–कभी** 27%	**समय प्रबन्धन नहीं करते** 26%	
7.	आप SNSs का प्रयोग प्रतिदिन करते है।	**हाँ** 65%	**कभी–कभी** 30%	**नहीं** 5%	

निष्कर्ष – इतनी तेजी से लोगों का सोषल साइट्स से जुड़ना इण्टरनेट की उनके जीवन में उपादेयता को दर्षाता है।

(ग) अवधारणा (3): विद्यार्थियों की सोषल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति रूचि–रूझान है।

टेबल–3
साइट के प्रति रूझान का विषय

क्र0 सं0	पद	मित्रों से चेटिंग	चित्रों को प्रेशित	नये लोगों को जानना	सूचना को प्रेशित करना
1.	SNSs पर आपकी सबसे पसंदीदा गतिविधि क्या है?	44%	11%	22%	23%
2.	आप किन्हें अपने ऑनलाइन सोशल नेटवर्क पर शामिल करने में वरीयता देते है?	आयुवर्ग वाले 52%	विभिन्न 14%	देशों के लोगों 22%	परिचित लोगों 12%
3.	आपके द्वारा SNSs के उपयोग का मुख्य उद्देष्य क्या है?	परिवार व मित्रों से जुड़े रहने के लिये 42%	स्व–प्रचार के लिए 9%	सूचना प्रेषित करने के लिए 24%	मनोरंजन के लिए 25%
4.	क्या आपको लगता है कि SNSs पर अन्य व्यक्तियों की उपलब्धियाँ देखकर चिंता होती?	हाँ 35%	कभी–कभी 35%	नहीं 30%	
5.	क्या आप अपने वास्तविक जीवन की परिस्थितियों या माहौल से बचने के लिए SNSs का प्रयोग करते है?	हाँ 38%	कभी–कभी 32%	नहीं 30%	
6.	आपके लिए SNSs कितना महत्वपूर्ण है?	आवश्यक 44%	अति आवश्यक 36%	नहीं 20%	
7.	कुछ व्यक्ति जिनसे आप SNSs के माध्यम से सम्पर्क में आये थे। आपके जीवन का महत्वपूर्ण भाग बन गये है?	हाँ 45%	कभी–कभी 24%	नहीं 31%	
8.	आप SNSs का प्रयोग अपने मोबाइल पर करते है?	हाँ 49%	कभी–कभी 35%	नहीं 16%	

निष्कर्ष:– आम नागरिक की अपेक्षा विद्यार्थियों में इण्टरनेट या सोषल साइट्स की तरफ रूचि ज्यादा दिखाई दे रही है। आँकड़े बताते है कि अधिकतर लोग अपने मोबाइल पर ही सोषल साइट्स का इस्तेमाल करते है ।

(घ) अवधारणा (4): सोषल नेटवर्किंग साइट्स से विद्यार्थियों के अध्ययन पर प्रभाव पड़ता है।

टेबल–4
अध्ययन पर प्रभाव

क्र0 सं0	पद	हाँ	कभी–कभी	नहीं
1.	क्या SNSs का प्रयोग आपको आपके पढ़ाई से ध्यान भंग करता है?	10%	18%	72%
2.	क्या आपको लगता है कि आप SNSs पर उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण बाते सीख सकते है जो बाते आप विद्यालय पर सीखते है?	60%	27%	13%
3.	आप SNSs का प्रयोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए करते है?	60%	30%	10%
4.	आप Chating करते हुये Shortcut Language का प्रयोग करते है।	61%	14%	25%
5.	आप SNSs का प्रयोग Group Study के लिए करते है।	50%	22%	28%
6.	You tube पर Study से सम्बन्धित Vedio देखते है?	43%	30%	27%
7.	किसी Medical Page से जुड़े है?	54%	18%	28%
8.	आप अपनी Study के समय SNSs का प्रयोग करते	28%	34%	38%

	है?			
9.	क्या आपकी Study पर SNSs प्रभाव डालती है?	34%	30%	36%

निष्कर्ष:– जहाँ एक ओर सोषल साइट्स उपयोगकत्री के अध्ययन को बढ़ाता है सोषल साइट्स पर आजकल भाषा का संक्षिप्तीकरण काफ़ी लोकप्रिय हो चला है। यू टयूब पर देखें जाने वाले विडियोज काफी प्रचलित हो चले है जिससे लोगों का ज्ञानबर्द्धन हुआ है।

(च) अवधारणा (5): SNSs पर सामाजिक सहभागिता बढ़ती है।

टेबल–5
समाजिक सहभागिता

क्र0 सं0	पद	1–100	100–200	200–400	500+
1.	आपकी पसंदीदा SNSs पर आपके कितने मित्र है?	56%	22%	10%	12%
2.	आप किसी अजनबी के साथ Chat करने में रूचि रखते है?	**हाँ** 61%	**कभी–कभी** 14%	**नहीं** 25%	
3.	आप अपने दोस्तों के साथ Facebook पर व्यक्तिगत सम्बन्धित जानकारी Share करते है?	**हाँ** 44%	**कभी–कभी** 26%	**नहीं** 30%	
4.	क्या आपकी Friend List में College के छात्र शामिल है?	**हाँ** 61%	**कभी–कभी** 25%	**नहीं** 14%	
5.	आप अपने दोस्तों से प्रतिदिन Chat करना पसन्द करते है?	**हाँ** 36%	**कभी–कभी** 38%	**नहीं** 26%	
6.	SNSs पर अधिक Update न होने के कारण आप को अपने दोस्तों से उपेक्षित व्यवहार सहना पड़ता है?	**हाँ** 20%	**कभी–कभी** 35%	**नहीं** 45%	
7.	आप किसी SNSs Famous हस्ती को follow करते है?	**हाँ** 32%	**कभी–कभी** 31%	**नहीं** 37%	

निष्कर्ष:– अवलोकन से यह भी पता चलता है कि विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ Chat करना अधिक पसन्द करते है तथा सम्पर्क में रहने से अध्ययन सम्बन्धी जानकारियाँ भी प्राप्त की जा सकती है। वह अपने सहपाठियों से ही नहीं बल्कि और लोगों से बात करना काफी हद तक पसन्द करते है।

(छ) अवधारणा (6): भविष्य में सोषल नेटवर्किंग भविष्य को उन्नत बनाने में सहायक है।

टेबल –6
उन्नति में योगदान

क्र0 सं0	पद	हाँ	कभी–कभी	नहीं
1.	क्या आपको लगता है कि हमारे देष में सोषल नेटवर्किंग साइट्स को अधिक बढ़ावा देना चाहिए?	52%	26%	22%
2.	आप SNSs के द्वारा जुड़ी जानकारी या ज्ञान सम्बन्धी सूचनाओं से संतुष्ट है?	51%	31%	18%
3.	आप सोषल नेटवर्किंग साइट्स पर किसी अपत्तिजनक टिप्पणी का विरोध करते है?	44%	26%	30%

निष्कर्ष – अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि किसी भी चीज के दो पहलू होते है। एक सकारात्मक तथा नकारात्मक अन्तर केवल उसका इस्तेमाल करने वालों में होता है। अच्छे कार्यो के लिए किये गये प्रयोगों से उसका सकारात्मक रूप उभरेगा तथा बुरे कार्यो के लिये किये गये प्रयोगों से उसका नकारात्मक रूप उभरेगा।

V विद्यार्थी के लिय सुझाव

(क) प्रस्तुत लघु प्रबन्ध में केवल माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 18–21 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों का अध्ययन किया है। जबकि यह अध्ययन विभिन्न स्तरों पर भी किया जा सकता है।

(ख) प्रस्तुत षोध कार्य केवल बरेली जनपद तक ही सीमित है। इसे मण्डल स्तर तक भी किया जा सकता है।

(ग) प्रस्तुत षोध कार्य का सम्पादन 100 न्यादर्ष पर किया गया है। जबकि भावी षोधकत्री विस्तृत न्यादर्ष का चयन करके अपने षोधकार्य का सम्पादन कर सकता है। जिससे और भी अधिक प्रभावित निष्कर्ष प्राप्त हो सकते है?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] अल्तेकर, एस0एस0 (1958): "प्राचीन भारत में षिक्षा", वाराणसी बुक डिपो, वाराणसी।

[2] बेस्ट, जे0डब्ल्यू0 (1963): "रिचर्स इन एजूकेषन", नई दिल्ली, प्रिन्टिस हाल ऑफ इण्डिया, प्राइवेट लि0।

[3] पाठक, पी0डी0 (1963): षिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृष्ठ–4।

[4] Garrettm H.E. (1970): Statistics in Psychology and Education, New York, Longmen Green & Corporation.

[5] अग्रवाल, जे0सी0 (2006): भारत में प्राथमिक षिक्षा, विद्या बिहार, नई दिल्ली, पृष्ठ–28।

[6] राय, पी0एन0 (2006): अनुसंधान परिचय, बारहवां संस्करण, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल,